मत्परं दुर्लभं मत्वा नूनमावर्जितं मया ।

पयः पूर्वैः स्वनिःश्वासैः कवोष्णमुपभुज्यते ।।67।।

अन्वय मत्परं दुर्लभं मत्वा मया आवर्जितं पय पूर्वै स्वनिःश्वासैः कवोष्णम् उपभुज्यते नूनम्।

अनुवाद मेरे पश्चात् पुत्र न होने से दुर्लभ समझकर आजकल मेरे द्वारा किए गए तर्पण जल को (मेरे) पितर अपने दुःख भरे निःश्वासों से कुछ गर्म करके पीते हैं (इसमें कोई सन्देह नहीं है)।

टिप्पणियाँ

पूर्वैः पितरों के द्वारा, आवर्जितम् दिया हुआ (आ धातु वृज् क्त)।

स्वनिःश्वासैः अपने साँसों से। वे यह सोचकर श्वास छोड़ते है कि उनको मालूम है कि दिलीप के पश्चात् उन्हें तर्पण देने वाला कोई नहीं होगा।

कवोष्णम् ईषद् उष्णमिति कवोष्णम् कुछ गर्म।

दुर्लभम् दुःखेन लब्धुं शक्यम् दुर्लभम् (दुर् धातु लभ् खल्)

उपभुज्यते उप धातु भुज् कर्मणि लट्।